International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन

*सुरमणी मंगदा, रिसर्च स्कॉलर,कलिंगा यूनिवर्सिटी

Article Info
Volume 8, Issue 6
Page Number : 551-557

Publication Issue
November-December-2021

Article History
Accepted : 15 Dec 2021
Published : 30 Dec 2021

सारांश:

प्रस्तुत शोध कार्य में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन सुनियोजित रूप में किया गया है। वर्तमान अध्ययन की समस्या यह है कि ''उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का स्तर क्या होगा '' प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन में सम्भाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। इसके लिये कक्षा हायर सेकेण्डरी के विद्यार्थियों द्वारा आंकड़ों का संग्रहण किया गया। सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन डॉ.आशुतोष कुमार द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग करके किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा ''टी'' मूल्य का उपयोग किया गया है। परिणाम से स्पष्ट होता है कि चाहे विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र का हो या शहरी क्षेत्र का उसके समायोजन में परिवेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है वह अपना सामाजिक समायोजन उचित प्रकार से कर सकता है अर्थात उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं देखा गया।

भगवान की सभी रचनाओं में से मानव जीवन सबसे पवित्र है। मानव जीवन के दो दृष्टिकोण है पहला जैविक तथा दूसरा सामाजिक। पोषण व प्रजनन मानव जीवन के जैविक पहलू हैं तो उसी प्रकार शिक्षा मानव जीवन के सामाजिक पहलू को बनाता है। शिक्षा बालक के बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करके उसकी उन्नति सुनिश्चित करने में सहायक होता है। शिक्षा ही बालक को सचेत बनाकर जीवन की विभिन्न जिम्मेदारियों को पूरा करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिये व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है। सत्य तो यह है कि शिक्षा से इतने अधिक लाभ है कि उनका वर्णन करना कठिन है। इस संदर्भ में यहां केवल इतना कह देना ही पर्याप्त होगा कि शिक्षा माता के समान पालन-पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्ग-दर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के ही द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है क्योंकि वह सामाजिक-भौतिक परिवेश में पैदा होता है और वहीं पर पलता-बढ़ता है। जीवन को चलाने के लिए पर्यावरण की अपेक्षाओं तथा इन अपेक्षाओं को पूर्ण करने के लिए मनुष्य के प्रयासों के बीच संतुलन अथवा सामंजस्य पर निर्भर करता है। व्यक्ति की जब स्वाभाविक इच्छा की पूर्ति नहीं हो पाती है तो वह धीरे-धीरे वह उस अप्रिय स्थिति से समझौता कर लेता है, इसी समझौते को ही 'समायोजन' कहते हैं।

सामाजिक समायोजन वह प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति जितना वह अपने आपसे समायोजित होने की आवश्यकता रखता है उतनी ही सामाजिक समायोजन की है। सामाजिक परिवेश का दायरा व्यक्ति के घर व परिवार से शुरू होकर विश्व-बंधुत्व की सीमाओं तक जाता है।

गुप्ता, सुषमा (1990)- ने विद्यालय जाने वाले विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशोरियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरियाँ ग्रामीण की तुलना में अधिक सामाजिक समायोजित थी। निजी विद्यालयों की तुलना में राजकीय विद्यालयों की छात्रायें कम समायोजित थीं, हिन्दी माध्यम की तुलना में अंग्रेजी माध्यम से अध्ध्यन कर रही किशोरियाँ अधिक समायोजित थी। **राय प्रज्ञा (2007).** इन्होंने कामकाजी माता व घरेलू माता के बच्चों पर समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि पर तुलनात्मक अध्ययन किया तथा कुल 100 विद्यार्थियों पर भिलाई नगर क्षेत्र पर अध्ययन कर पाया कि बच्चों को सही निर्देशन व मार्गदर्शन दिया जाये तो माता के काम करने का उनके समग्र विकास पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए माता के कामकाजी होने का बच्चों के लिए हानिकारक नहीं है। कामकाजी एवं घरेलू माताओं के बालक-बालिकाओं में समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया अत: माता का कामकाजी होना बच्चों के समायोजन पर प्रभाव डालता है। **तिवारी, राजेश (1996)** – ने व्यक्तित्व समायोजन में सामाजिक समूह और उनके बुद्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया जिसमें निष्कर्ष पाया कि विभिन्न वर्गों एवं बुद्धि प्राप्तांक में सार्थक अंतर पाया गया। तथा बालक एवं बालिकाओं के बुद्धि प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्य वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग में समायोजन क्षमता अधिक पायी गयी। **डब्ल्यू. जी. इमेट (1954)** ने ''हाईस्कूल के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन का एक अध्ययन, प्राथमिक विद्यालयों में परीक्षणों के माध्यम से भविष्यवाणी करना'' पर किया। जिसमें निष्कर्ष में पाया गया कि अच्छे अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का समायोजन अच्छा होता है और शैक्षिक सम्प्राप्ति द्वारा समायोजन के बारे में अच्छे ढंग से भविष्यवाणी कर सकते हैं। तथा यह भी बताया कि अंग्रेजी के परीक्षणों को बुद्धि परीक्षण के साथ जोड़ दिया जाय तो भविष्यवाणी की क्षमता में सुधार होता है। **दिक्षणी कैरोलीना के हैरीसन विलियम (1976)[2]** – ने विश्वविद्यालयी छात्रों के समायोजन पर अध्ययन किया। इन्होंने अपने

अध्ययन में पाया कि एक ही पारिवारिक वातावरण के छात्रों एवं छात्राओं के समायोजन में विद्यालयी वातावरण का कोई विशेष असर नहीं पड़ता है।

इस शोध समस्या में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन किया गया है। तथा इसमें यह देखा जायेगा कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन का प्रभाव परिवेश के आधार पर पड़ता है अथवा नहीं। बच्चे अपनी सामाजिक बुद्धि का सही समय व स्थान पर प्रयोग करके अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हैं तथा अपनी सामाजिक बुद्धि के द्वारा बहुत जटिल कार्यों को भी सरलता से कर लेते हैं और अपने सामाजिक क्षेत्र या परिवेश में समायोजन भी उचित प्रकार से कर पाते हैं, प्रस्तुत समस्या के अंतर्गत हायर सेकेण्डरी के बच्चों की सामाजिक समायोजन क्षमता किस प्रकार की है और उसका प्रभाव परिवेश के आधार पर पड़ता है या नहीं इसका अध्ययन सुनियोजित रूप से किया गया है।

समस्या

"उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का स्तर क्या होगा "

प्रस्तावित शोध समस्या जो कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन इसमें शोध की आवश्यकता एवं महत्व गहन रूप से है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले किशोर बालक व बालिकायें अपनी बुद्धि का उपयोग करके किस प्रकार अपने आपको समायोजित करते हैं व अपनी समस्या का हल ढूँढ़ लेते हैं एवं सामाजिक समायोजन के द्वारा वह पर्यावरण की अपेक्षाओं तथा इन्हें पूर्ण करने के लिये प्रयास करते हैं।

अत: प्रश्न यह उठता है कि क्या उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन का स्तर एक समान रहता है अथवा इसमें कोई अंतर पाया जाता है। एवं उनके परिवेश का प्रभाव पड़ता है या नहीं।

परिकल्पना

H_1 - शहरी क्ष्ोत्र व ग्रामीण क्ष्ोत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन में सम्भाव्य न्यादर्श विधि (यादृच्छिक विधि) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु हायर सेकेण्डरी के जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के 300 एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के 300 विद्यार्थी जिनकी कुल संख्या 600 है।

शोध अध्ययन के लिये सामाजिक समायोजन मापनी का इस्तेमाल किया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन डॉ. आशुतोष कुमार द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग करके किया गया। सामाजिक समायोजन की विश्वसनीयता 0.88 है। तथा वैधता 0.67 है।

परिणाम -

H_{01} **'शहरी क्ष्ोत्र व ग्रामीण क्ष्ोत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।'**

इस परिकल्पना के सत्यापन के लिए हायर सेकेण्डरी के ग्रामीण क्षेत्र तथा शहरी क्षेत्र के 600 विद्यार्थियों के प्राप्तांकों को व्यवस्थित किया गया तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदत्तों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्रदत्तों का "टी" मान ज्ञात किया गया । इसे तालिका 1 में दर्शाया गया है ।

तालिका क्रमांक – 1

सामाजिक समायोजन मापनी पर विद्यार्थियों के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' मान

सामाजिक समायोजन मापनी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	df	t मूल्य	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी	300	56.35	6.86	598	1.72	0.01 स्तर पर असार्थक
शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी	300	57.25	5.98			

*0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' का सारणी मान = 2.58

विश्लेषण -

उपरोक्त तालिका क्रमांक - 1 में सामाजिक समायोजन क्षमता मापनी पर प्राप्त हायर सेकेण्डरी स्तर के 300 ग्रामीण तथा 300 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्रदत्तों का कुल सामाजिक समायोजन का मध्यमान क्रमश: 56.35 व 57.25 ,प्रमाणिक विचलन क्रमश: 6.86 व 5.98 तथा उनके मध्य "टी" मूल्य 1.72 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के स्तर df = 598 पर सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है अत: यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के हायर सेकेण्डरी स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है । अत: हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है ।

दण्डआरेख संख्या – 1

सामाजिक समायोजन मापनी पर ग्रामीण विद्यार्थी एवं शहरी विद्यार्थी के मध्यमान का दण्डआरेख

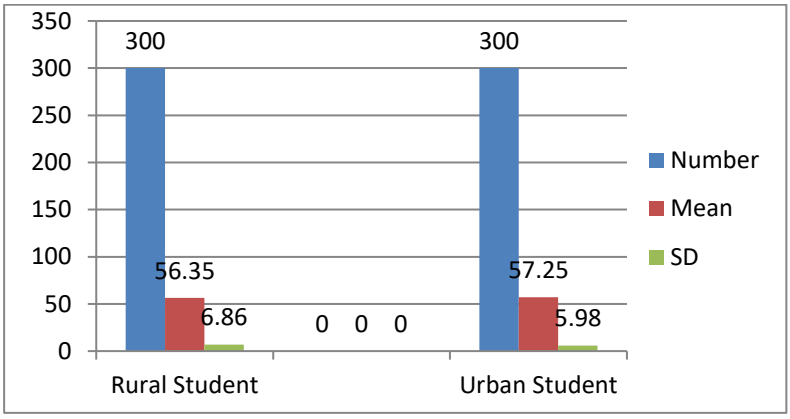

स्वतंत्र अंश 598, **0.01** स्तर पर सार्थक नहीं।

व्याख्या -

प्रतिपादित परिकल्पना- 1 में सामाजिक समायोजन मापनी की परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है अत: यह स्पष्ट है कि हायर सेकेण्डरी स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। अत: हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

कारण – इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवेश का विद्यार्थियों के समायोजन पर धनात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है,चाहे विद्यार्थी शहरी हो या ग्रामीण दोनों ही का सामाजिक समायोजन बेहतर पाया जाता है। वे अपने क्षेत्र विशेष या आसपास के वातावरण में अपने आप को भलीभांति समायोजित कर सकते हैं।

H_{02} '' **शहरी क्ष्ोत्र व ग्रामीण क्ष्ोत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''**

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन के लिए हायर सेकेण्डरी के 150 ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का तथा 150 शहरी क्षेत्र के छात्रों के सामाजिक समायोजन परीक्षण के मूल्यांकन के पश्चात संकलित प्राप्तांकों को व्यवस्थित किया गया तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदत्तों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्रदत्तों का सत्यापन ''टी'' मान ज्ञात कर किया गया है। विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका 2 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक – 2

सामाजिक समायोजन मापनी पर छात्रों **के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' मान**

सामाजिक समायोजन मापनी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	df	t मूल्य	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र के छात्र	150	56.17	4.92	298	0.30	0.01 स्तर पर असार्थक
शहरी क्षेत्र के छात्र	150	56.34	4.96			

*0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' का सारणी मान = 2.58

दण्डआरेख संख्या – 2

सामाजिक समायोजन मापनी पर ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों के मध्यमान का दण्डआरेख

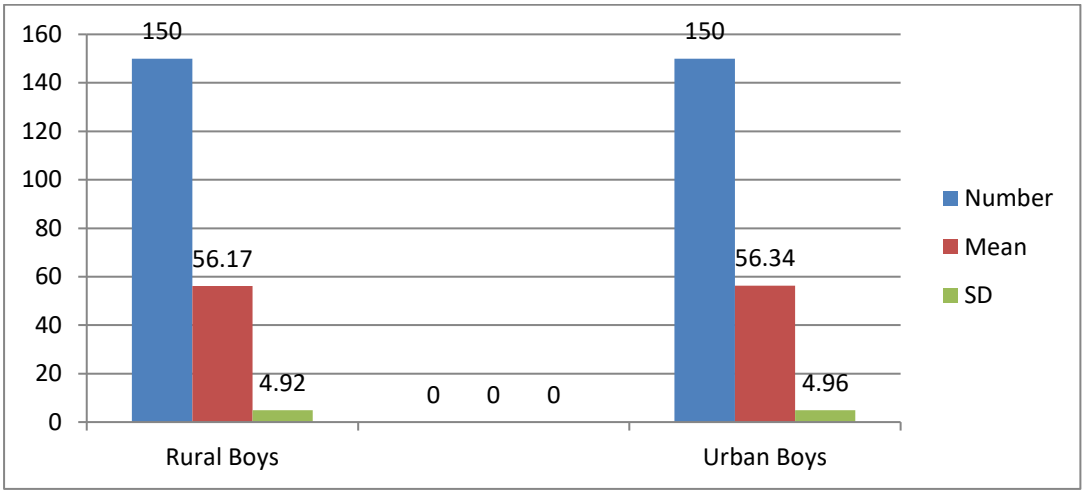

स्वतंत्र अंश 298, 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं।

व्याख्या -

प्रतिपादित परिकल्पना- 2 में सामाजिक समायोजन मापनी की परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है अत: यह स्पष्ट है कि हायर सेकेण्डरी स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। अत: हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

कारण – इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवेश का छात्रों के समायोजन पर धनात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है,चाहे छात्र शहरी हों या ग्रामीण दोनों ही का सामाजिक समायोजन बेहतर पाया जाता है। वे अपने क्षेत्र विशेष या आसपास के परिवेश में अपने आप को भलीभांति समायोजित कर सकते हैं।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष -

अत: माता-पिता को चाहिये कि अपने बालक/बालिकाओं को अपना ज्यादा से ज्यादा समय प्रदान करें, जिससे कि उनका सामाजिक बुद्धि का विकास स्वमेव हो पायेगा । सामाजिक विकास के फलस्वरूपय ही वे आपसी सहयोग के द्वारा उचित सामाजिक समायोजन भी कर पायेंगे । बालक समाज मे पैदा होता है तथा समाज के बीच रहकर ही बड़ा होता है जिसके कारण उसमें स्वत: ही सामाजिक समायोजन का गुण आ जाता है, फिर भी कुछ विद्यार्थी सामाजिक समायोजन नहीं कर पाते । अत: इन विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन का विकास करने हेतु अभिभावकों व शिक्षकों को प्रयास करना चाहिये कि उनमें सामाजिक समायोजन का गुण किस प्रकार विकसित की जाये जिससे कि वे उसका उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में कर सकें एवं अपना व देश के विकास में सहयोग प्रदान कर सकें।

संदर्भित ग्रंथ सूची

गुप्ता, सुषमा (1990), एजुकेशनल एज ए फैक्टर ऑफ सोशल एडजस्टमेन्ट ऑफ एडोल्सेन्ट गर्ल्स एक्रास डिफरेन्ट लेवल्स ऑफ सोसियो इकोनॉमिक स्टेट्स, पी-एच.डी. पंजाब यूनिवर्सिटी, वाई एम.बी. बुच फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च-11, पृ. 820.

हैरीसन, विलियम (1976), ''अ स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट आन यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स'' (फिफ्थ एडीसन) एन.जे.

राय, प्रज्ञा, (2010), "कामकाजी माता व घरेलू माता के बालक व बालिकाओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन। लघुशोध प्रबंध पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

तिवारी, राजेश (1996), ए स्टडी ऑफ द पर्सनॉलिटी एडजस्टमेंट इन रिलेशन टू सोशल ग्रुप एण्ड देयर इन्टेलीजेन्स, पूर्वांचल जर्नल ऑफ एजुकेशन स्टडीज,वैल्यूम-6, पृ. 5-8.

डब्ल्यू., जी. इमेट (1954), हाईस्कूल के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन का एक अध्ययन, प्राथमिक विद्यालयों में परीक्षणों के माध्यम से भविष्यवाणी करना, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजी वैल्यूम पृ. 91-98.